हमको है विश्वास

गीता धर्मराजन

चित्राँकनः तसनीम अमीरुद्दीन

आई लव इंडिया

कथा की 300एम थिंकबुक

मेरी क्यूरी

भौतिक शास्त्री और रसायन शास्त्री

मेरी या मारिया ५ भाई-बहनों में सबसे छोटी थीं। उनके माता-पिता शिक्षक थे। वे पोलैंड से थे।

उनका परिवार गरीब था। माता के निधन के बाद मेरी ने अपने परिवार की सहायता करने के लिए नौकरी करना शुरू कर दिया। पर वे पढ़ना चाहती थी, इसलिए जब भी मौका मिलता था, छोटी मेरी जितना हो सके,उतनी पढ़ाई करती थी।

उन्होंने कॉलेज की पढ़ाई के लिए धन जमा करने के लिए आठ वर्षों तक नौकरी की ! फिर चौबीस वर्ष की आयु में उन्होंने पेरिस के सोर्बोन विश्वविद्यालय में दाखिला लिया।

और वे उस समय एक कामयाब वैज्ञानिक बनी, जब शायद ही कोई और महिला वैज्ञानिक थी।

मेरी क्यूरी ने अपने उद्देश्य के रास्ते में किसी भी मुश्किल को आड़े नहीं आने दिया। प्रथम विश्वयुद्ध के दौरान मेरी क्यूरी ने जंग के मैदान के निकट एक्स-रे यूनिट लगाने की ज़िम्मेदारी ली ताकि सैनिकों के इलाज में सहायता हो सके। उन्होंने अपने वैज्ञानिक पति, पियरे क्यूरी के साथ मिलकर रेडियम की खोज की और सम्पूर्ण विश्व को नया तोहफा दिया!

विज्ञान के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार जीतने वाली वह प्रथम महिला थीं और उन्हें यह पुरस्कार दो बार जीता।

अमीलिया इयरहार्ट

विमान चालक

“मैं करुँगी, मैं करुँगी, मैं करुँगी!” अमीलिया खुद से हमेशा यही कहती थी। जब वह छोटी थी, उस समय आकाश में केवल चिड़ियाँ ही उड़ती थी। पर अमीलिया भी उड़ना चाहती थी।

वह सभी से अलग थी, यह बात सब को पता थी। उस दौर में लड़कियाँ बाहर के खेल नहीं खेलती थीं, पैंट नहीं पहनती थीं, केवल लम्बे बाल ही रखती थीं, और पढ़ाई भी नहीं करती थीं। पर अमीलिया को यह नियम नहीं पसंद थे।

जहाँ अमीलिया की उम्र की लड़कियाँ गुड्डे-गुड़ियों से खेल रही होती थीं, वहीँ अमीलिया अपने तरीके की मस्ती करती थी। अमीलिया को हर चीज़ के बारे में उत्सुकता थी। वह हर चीज़ जानना चाहती थी, जैसे, कोई चीज़ कैसे काम करती है, लोग कितने अलग-अलग होते हैं, अलग-अलग जगहें कैसी दिखती हैं!

अमीलिया जब बड़ी हुई तो उसने अपने लिए सुविधाएं मांगी जो उस समय लड़कों को मिलती थी।

उनके परिवार ने उनका पूरा समर्थन किया। और अमीलिया का अहसास हुआ, यदि वह अपने सपनों को पाने की कोशिश करेगी, तो उसका जीवन एक सुन्दर से खेल की तरह हो जाएगा। क्योंकि यदि तुम अपनी पसंद का काम करते हो, तो तुम्हें वह किसी खेल जैसा ही लगेगा।

अमीलिया एक विमान चालक, यानि एक पायलट बनी। पर उससे पहले उन्होंने फ़ौज में नर्स की नौकरी की, समाज सेवा की और अंग्रेजी की शिक्षिका भी रहीं। उनके पिता ने उन्हें समस्याओं से भागना नहीं सिखाया था। और अमीलिया ने जीवन में सभी चुनौतियों का बहादुरी से सामना किया।

तीस वर्ष की आयु में वे संयुक्त राष्ट्र में हवाई जहाज़ उड़ाने वाली पहली महिला पायलट बनीं।

वह अटलांटिक महासागर को पार करने वाली पहली महिला बनीं, हालांकि यह उन्होंने एक यात्री के तौर पर किया था! वे अपने जीवन में एक के बाद एक नए कीर्तिमान स्थापित करती रहीं।

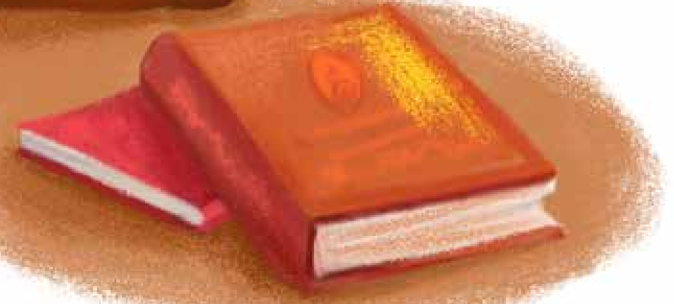

रामानुजन

गणितज्ञ

बहुत समय पहले तामिल नाडु के कुम्बकोनम नाम के छोटे से नगर में रामानुजन नाम का एक लड़का रहता था। उसने दस वर्ष की आयु से पहले ही अंग्रेज़ी, तामिल, भूगोल और गणित में प्राथमिक परीक्षाएं उत्तीर्ण कर ली थीं। उसे पूरे ज़िले में प्रथम स्थान प्राप्त किया था!

यह देखकर उसके माता-पिता ने उसको एक बड़े विद्यालय में दाखिला दिला दिया। पर उसके माता-पिता गरीब थे और कॉलेज के बच्चों को कमरे किराये पर देकर अपना जीवन बसर करते थे। रामानुजन को जल्दी ही समझ में आ गया की उसे गणित बहुत अच्छा लगता है। यह वही विषय था जो कॉलेज के छात्र पढ़ते थे। और तभी से, यदि कोई रामानुजन को खोजने निकलता तो वह यही देखता की रामानुजन कॉलेज के छात्रों के साथ गणित के बारे में चर्चा कर रहा है।

रामानुजन ने ग्यारह वर्ष की आयु में वह सब सीख लिया था जो कॉलेज के छात्रों को सिखाया जाता था। चौदह वर्ष का होते-होते वे गणित के उन सवालों को हल कर रहे थे जो कोई और नहीं कर सकता था। उन्हें उसके लिए पुरस्कार भी मिले।

सोलह वर्ष की आयु में उन्हें जी.एस. कार द्वारा लिखी एक पुस्तक मिली। उस पुस्तक में ५००० (5000) से भी अधिक गणित के प्रमेय थे। सोचो, रामानुजन को इस पूरी किताब को हल करने में कितना समय लगा होगा? एक वर्ष से भी कम! उन्हें उस वर्ष सर्वश्रेष्ठ छात्र होने का खिताब मिला और कुम्बकोनम के सर्वश्रेष्ठ विद्यालय में पढ़ने हेतु वजीफ़ा भी मिला। परन्तु, रामानुजन की केवल गणित में रूचि थी। बहुत मेहनत के बावजूद वे बाकी के विषयों में सफल नहीं हुए!

उनके गणित के शिक्षकों को रामानुजन का सवालों को हल करने का तरीका समझ में नहीं आता था। पर उन्होंने गणित के ऐसे ऐसे सवालों का हल निकला जो कोई और नहीं निकाल सका था।

रामानुजन की तैंतीस वर्ष की आयु में मृत्यु हो गयी। पर आज भी उनके द्वारा हल किये गए परिणाम , गणित के सिद्धांत और भारी मात्रा में प्राप्त अप्रकाशित पत्र जो कई प्रमेयों से भरे हुए हैं, विश्व भर के गणितग्यज्ञों को विस्मित करते हैं।

इनमें से किसी ने भी, कभी हार नहीं मानी!

क्या तुम ऐसे भारतीय लोगों के नाम ढूंढ सकते हो जिन्होंने विश्व को दिखाया कि परिश्रम करके आसमान छूने में ही जीवन का असली आनंद है?

गीता धर्मराजन को बेहद पसंद है लिखना, विशेष रूप से बच्चों के लिए। इन्हें 2012 में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

तसनीम अमीरुद्दीन चित्रकार हैं। वह मुंबई से हैं। गुलाबी शामें, नटखट बच्चे, अँधेरी रातें और टिमटिमाते सितारे उन्हें बहुत प्रेरित करते हैं। उन्हें परियों की कहानियों और चटकीले रंगों से बहुत खुशी मिलती है।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" — **नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" — **पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" — **टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

— **चार्ल्स लैंड्री, *द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021
कृति स्वामित्व © कथा, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
चित्रॉकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्षयः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंभकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

'I Love Reading' Library कथा की एक खास श्रृंखला है। यह नए और संकोची बच्चों को सहजता से पढ़ना सिखाती है। इसका पाठ्यक्रम अलग – अलग स्तर पर पढ़ने वाले बच्चों को ध्यान में रख कर बनाया गया है। यह बेहतरीन साहित्य और कला को भारत एवं दुनिया भर से एकत्रित कर बनायी गयी है।
यह किताबें गीता धर्मराजन के 'StoryPedagogy' पर आधारित हैं। यह एक खास तरह का मॉडल है जो पहले स्कूल नहीं गए हुए बच्चों के लिए बनाया गया था। बच्चों को 'TADAA' (Think, Ask, Discuss, Act and Achieve) और 'बड़े विचारों' के द्वारा यह उनमें पढ़ने की खुशी और समझने की क्षमता बढ़ता है।

Katha's Holistic Early Learning (KHEL!) लैब सरकारी, निजी और गैर – लाभकारी विद्यालयों में कार्यशालाएँ कराती है। यह ऑनलाइन चलने वाली कार्यशालाएँ हैं। इसमें शिक्षकों, विद्यालय प्रबंधकों और स्वयं सेवकों को प्रमाण पत्र भी दिया जाता है।
अधिक जानकारी के लिए 300m@katha-org पर जाएँ।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं इसकी ऑरेंज श्रृंखला में आनंद और समझने के लिए पढ़ो

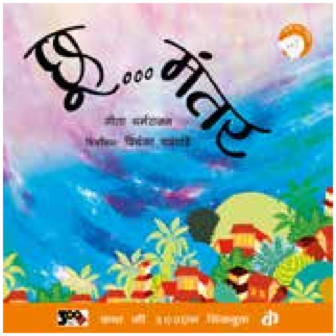

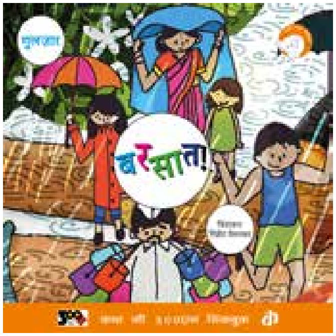

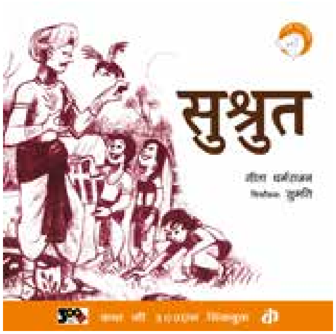

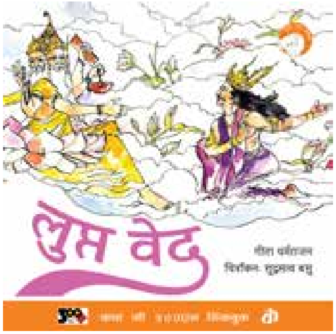

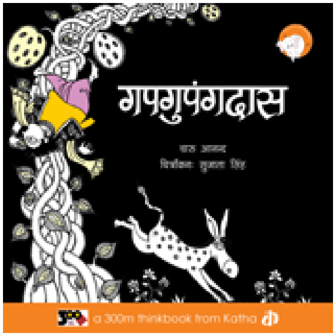

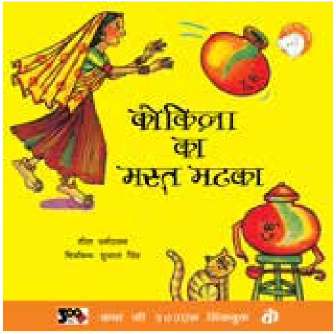

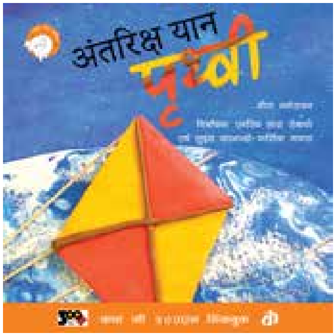

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
www.katha.org
₹ xxx